International Journal of Applied Research 2018; 4(12): 346-349

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(12): 346-349
www.allresearchjournal.com
Received: 20-10-2019
Accepted: 23-11-2019

सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर (हिन्दी),
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़,
हरियाणा भारत।

Correspondence
सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर (हिन्दी),
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़,
हरियाणा भारत।

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कहानी संग्रह 'गन्धर्व गाथा' मे राजनैतिक परिदृश्य

सुनीता वर्मा

प्रस्तावना

सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति राजनैतिक क्रिया – कलापो के द्वारा होती है इसलिए राजनीतिक मतवादों, राज्य तथा व्यक्तियों के सम्बन्धों, राजनीतिक संगठनों के क्रिया कलापों का अध्ययन राजनैतिक चेतना के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी राज्य मे रहता है और जहाँ राज्य है वहाँ राजनीति है वह राजनीति स्वस्थ हो या दूषित प्रत्येक नागरिक को, चाहे अनचाहे झेलनी पड़ती है राज्य की राजनीति का लक्ष्य तो जनकल्याण होता है, व्यवहार पक्ष भले ही कैसा भी रहे, परन्तु आम आदमी का जीवन सैद्धान्तिक राजनीति से कम, इसके व्यवहारिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है।

राजनीति समाज का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज के उत्थान – पतन मे उसका विशेष योगदान होता है। समाज राष्ट्र – विशेष की शासन व्यवस्था के नियमों एवं नीतियों के सम्मिलित रूप को राजनीति कहा जा सकता है। विभिन्न प्रकार के शासक तथा भिन्न – भिन्न समय एवं परिवेश के अनुसार राजनीति के अनेक रूप होते है। शासक एवं राज्य धर्म चारियों की स्वार्थ – वृत्ति, सत्ता लोलुपता के कारण इसमे अनेक विकृतियाँ पायी जाती है। स्वतन्त्रता – पूर्व भारत की प्रजा ने स्वराज्य को लेकर अनेक सुनहरे स्वप्न संजोय थे, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उनके स्वप्न खण्ड – खण्ड होते दिखाई देते है। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् राजनीतिक क्षेत्र मे ऐसी धाँधली मची कि सच्चे देशभक्त पीछे रह गए और स्वार्थी व सत्तालोलुप तत्वो ने शासन की बागडोर अपने हाथों मे ले ली। स्वार्थपरता, सत्ता लोलुपता, भ्रष्टाचार एवं दलबदल की प्रवृत्ति जैसी अनेक विध बुराईयों ने भारतीय राजनीति को भ्रष्ट, खोखली एवं नीतिविहिन बना दिया। वैसे ये राजनीतिक बुराईयाँ प्राचीन समय से लेकर आज तक की राजनीति मे थोडी बहुत मात्रा मे दृष्टिगोचर होती रही है।

अध्ययन का उदेश्य

साहित्य समाज का दर्पण कहा गया है। युगधर्मी साहित्यकार अपने युगीन यथार्थ का विभिन्न क्षेत्रों की अच्छाईयों और बुराईयों का सजीव चित्रण अपने साहित्य मे उभारता है मनीषा जी एक ऐसी ही प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है लेखिका ने अपने कथा – साहित्य का सृजन तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के धरातल पर किया है उन्होने युगीन परिस्थितियों को अपने कथा – साहित्य मे सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है इनके मध्य ही उनके पात्रों के चरित्र का विकास हुआ है।

परिस्थितियों के अनुरूप ही व्यक्ति का व्यक्तित्व बनता है अतः मनीषा ने भी परिस्थितियों के अनुसार क्रियाशील बनाकर पात्रों की सृष्टि की है। उनकी सामाजिक चेतना राजनीतिक चेतना से प्रभावित है।

कथाकार ने अपने पात्रों के अर्न्तमन पर युग विशेष की विशेषताओं के घटित होने की प्रक्रिया को सामंजस्य व समन्वय द्वारा प्रस्तुत किया है युगीन राजनीतिक पृष्ठ भूमि से प्रभावित होकर व प्रेरणा ग्रहण करके मनीषा ने आधुनिक प्रजातन्त्र का युग – चित्र अपनी कहानियों मे प्रस्तुत किया है। जो मानव – जीवन व समाज के विभिन्न पक्ष धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि से परिपूर्ण है साहित्यकार के मानसिक संवेग एवं विवेक शक्ति उस परिवेश से प्रभावित होते है जिसमे वह रहता है इसी कारण मनीषा राजनीतिक चेतना से अंस्पृक्त सी रहकर राजनीति को उपेक्षित नही रख सकी। राज्य व्यवस्था, राजतन्त्र, शासन तन्त्र, जन – आन्दोलन और उसमे व्यक्ति की भूमिका, उनकी गतिविधियों, क्रियाकलाप सभी का चित्रण लेखिका ने किया है।

राजनीति विज्ञान राज्य का, सता की एक संख्या के रूप मे उसके सम्बन्धों उसकी उत्पत्ति, जनता एवं देश की परिस्थितियों, इसके उद्देश्य, नैतिक महत्व, उसकी आर्थिक समस्याओं, वित्तीय स्थिति एवं जीवन दशाओं आदि का समग्र विवेचन करता है। आज राजनैतिक समस्याएं हमारी प्रमुख समस्याएं है राजनीति का भी समाज से अलग कोई अस्तित्व नही। राज्य की कल्पना समाज के हित मे रखकर ही की गई है। आज समाज का कोई पक्ष उससे अप्रभावित नही रहा। वास्तव मे राज्य का कार्य समाज के आदर्शो का प्रवर्त्तन करना व समूह की रक्षा करना प्रतीत होता है सरकार समाज के नाम पर कार्य करती है ऐसे ही सत्ता के प्रति साहित्यकारों का भी समर्थन एवं विरोध सदा व्यक्त होता रहा है। वे अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से इसका मात्र विवेचन ही नही करते अपितु उसे नवीन दिशा प्रदान करने के लिए भी प्रयत्नशील रहते है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने भी अपनी रचनाओं मे राजनीतिक शासन पद्धति का सजीव चित्रण किया है वर्तमान भारत की राजनीतिक प्रणाली मे व्याप्त विकृतियों के प्रति कहानीकार मनीषा का विशेष ध्यान गया है। इसके साथ ही बेरोजगारी भी हमारी राजनीतिक प्रणाली के सामने एक ऐसा मुद्दा है जो देश के आजाद होने के बाद अब तक वैसे का वैसा बना हुआ है मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों मे समाज और व्यवस्था द्वारा लाद दी गई नैतिकता और वर्जना की गठरी को उतार फेंकने की संघर्ष यात्रा शामिल है।

इसलिए किसी भी राज्य मे सामाजिक जीवन की दिशा बहुत कुछ राजनीति पर निर्भर करती है साहित्यकार भी इसी समाज का अंग है, इसके लिए वह इस जीवन से प्रभावित न हो, यह बात सम्भव नही है साहित्यकार जब भी कलम उठाता है इस राजनीति की प्रतिक्रिया उसकी कृति मे व्यक्त होने लगती है, मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों मे भी राजनीति प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। 'गन्धर्व गाथा' कहानी संग्रह की कहानी 'स्वांग' मे नायक गफ्फार खां की पुरानी और रूढ़ होती स्वांग परम्परा को नकारा समझकर 'राष्ट्रपति पुरस्कार' प्राप्त होने के नाते 300 रू० प्रतिमाह पेंशन होना और अपने कैंसर जैसे ईलाज के लिए सरकार से आर्थिक सहायता की अपेक्षा रखना पर कलेक्टर द्वारा मना करने पर अपनी लोककला के तिरस्कृत होने के बावजूद गफ्फार खां का चुपचाप वहाँ से चले जाना एक तरह से राजनीतिक नेताओं के दांव – पेंच मे उलझे गफ्फार खां जैसे लोगो की विवशता का वर्णन है इतना ही नही कहानी मे लेखिका ने राजनीतिक दलों का हिन्दू – मुस्लमान जैसे मुद्दों पर होने वाले मसलों पर अपनी पार्टी के निजी स्वार्थ हेतु हवा देना और जनता के सामने एक अच्छे राजनीतिक नेता होने के दिखावे करना हमारी राजनीतिक शासन प्रणाली को दर्शाता है आज के आधुनिककरण के दौर मे राजनीतिक मूल्यों का ढांचा चरमरा गया है।

इसी प्रकार 'कालिन्दी' कहानी मे भी नायिका 'जमना' जो वेश्यावृत्ति मे गहरे तल तक धँस चुकी है किसी तरह अपने बेटे को इस माहौल से अनजान रखते – रखते अपने अस्तित्व मे ही गुम हो जाती है सरकार द्वारा इस तरह की वेश्यावृति को रोकने या प्रतिबन्ध लगाने जैसे कोई काम नही किए जा रहे है अपितु उन औरतों का समाज मे रहना मुश्किल है क्योंकि अगर वो वेश्यावृत्ति को छोड़ना चाहे, समाज मे आकर आम लोगो के साथ कोई ओर काम के द्वारा अपनी जीविका चलाना चाहे तो समाज सहयोग नही देता और हमारे राजनीतिक नेताओं का भी इन वेश्याओं के हित की तरफ कोई ध्यान नही जाता परिणाम स्वरूप अश्लीलता हमारे समाज मे ही नही, हमारी राजनीति मे भी गहरे तल तक व्याप्त है जिसे कोई देखना नही चाहता। बेरोजगारी से रोजगार की तलाश मे लोग अपने घर – परिवार को छोड़कर दूसरे शहरों मे काम की तलाश मे आते और कैसे उनका फिर इन वेश्याओं को कुचलने का सिलसिला शुरू होता है।

मेरा ईश्वर यानि ..... लव रूल्स विदाउट रूल्स कहानी मे लेखिका ने उन प्लास्टर ऑफ पेरिस के मुखौटों का जिक्र किया है, जिससे हर आदमी अपनी शख्शियत को छुपा सकता है जैसा कि हमारे राजनीतिक नेता करते है आम जनता से किए गए झूठे वादों और बड़ा पद मिलने पर अलग – अलग मुखौटो मे वो नजर आते है हर बात एक नया मास्क उन्हे इतना रहस्यमयी बना देता है कि उनका रहस्य वो खुद ही नही जान पाते है आज आधुनिक युग मे ना केवल राजनीतिक नेताओं अपितु हर इंसान के पीछे एक मुखौटा होता है जिससे वो अपने आप को दूसरो के हाथों टूटने से बचाने की कोशिश मे इस्तेमाल करता है इस तरह से लेखिका ने अपने लेखन को मात्र किसी विमर्श के चौखटों मे कैद ना करते हुए साहित्यिक आन्दोलन धर्मी स्वरूप मे रचते हए अपनी खास शैली – मुद्रा का निर्माण किया है जो उन्हे अलग एवं विशिष्ट पहचान देता है।

अगली कहानी एडोनिस का रक्त और लिलि के फूल कहानी मे पितृसत्तात्मक समाज मे सम्भोग की ऐसी जैविक क्रिया के रूप से दिखाया गया जिसमे पुरूष और स्त्री दोनो की भूमिकाएं और उद्देश्य अलग – अलग होते है ''पितृसत्ता ने जमाने से स्त्री तन – मन पर इतनी वर्जनाए थोप रखी है कि वह अपनी कामनाओ को आसानी से आवाज भी नही दे सकती। पुरूषवादी समाज व शासन व्यवस्था ने हमेशा से स्त्री के मन और तन दोनो पर पहरे बिठाये है विडम्बना तो यह है कि इस नैसर्गिक इच्छा को व्यक्त करने का हक स्त्रियों को नही रहा। स्त्री को हमेशा से वस्तु और चीज मानने वाली पितृसतात्मक व्यवस्था ने कभी यह सोचने वाली जरूरत ही नही समझी की स्त्री – देह मे भी इच्छा और कामना की रेशमी शिरायें होती है।'' [1]

''प्रेम वह उदात्त भावना है जो एक पाषाण को पिघलाकर भी एक तरल – नरम मानवीय भावना से भर देती है और अहंकार भावना जैसे तत्वों को हटाकर चित को साफ, पवित्र कर दे। स्त्रियाँ उस उदात प्रेम – चित्रण का नही, स्त्री – पुरूष सम्बन्धों की उस अश्लील प्रस्तुती का विरोध करती है जहाँ प्रेम की मानवीय उदरता के बजाय स्त्री – पुरूष का सम्बन्ध शर्मनाक व घृणास्पद किस्म के रिश्तों का एक उत्पीड़न भरा मिश्रण बनाकर सामने लाया जाता है'' [2] स्त्रियों के लिए ही नही, प्रेम की यह विकृत प्रस्तुति सबके लिए अमंगलकारी है चाहे फिर वो राजनीतिक प्रणाली ही क्यों न हो।

मनीषा कुलश्रेष्ठ ने साहित्य को कल्पना की अतिशयता से मुक्ति दिलाकर राजनीतिक दलों का ठोस यथार्थ अपनी कहानियों के जरिए जनता के सामने लाने का प्रयास किया है विशेषकर स्त्रियों के मान, मर्यादा जैसी भावनाओं के प्रति हमारी शासन व्यवस्था मे चेतना लाने का प्रयास किया है। 'एडोनिस का रक्त और लिली के फूल' कहानी मे पृष्ठभूमि युद्ध की दिखाई गई है जहाँ 'मेजर' सहित अनेक लोग घायल और मर भी जाते है लेखिका ने कहानी के द्वारा हमारी शासन व्यवस्था का ध्यान युद्ध मे घायल व मरे हुए निपराध लोगों तक खींचने की कोशिश की है ताकि देश मे अन्य देशों के साथ शान्तिपूर्ण वार्तालाप के द्वारा युद्ध तक ले जाने वाले भयावह मसलों को आसानी से सुलझाया जा सके।

'परजीवी' व 'खरपतवार' कहानी मे भी 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' ने ''पितृसत्तात्मक व्यवस्था के उस रूप का वर्णन किया है जो स्त्री के जीवन पर नियन्त्रण को वैद्य एवं स्थायी बनाने के लिए एक जैसी समाजशास्त्रीय विधान की सरंचना करता है जहाँ परिवार, धर्म, न्याय, शिक्षा एवं मीड़िया ने स्त्री विरोधी नियमों, वर्जनाओं, आचार संहिताओं, रीतियों एवं दंड संहिताओं पर स्वीकृति की मुहर लगाकर पुरूष की वर्चस्ववादी स्थिति मजबूत की और इसका बड़ा कारण है। विश्व के विभिन्न राष्ट्रो की पारम्परिक एवं आधुनिक न्याय व्यवस्था का चेहरा पुरूषवादी है।'' [3]

'बिगडैल बच्चे' कहानी मे लेखिका ने भारतीय राजनीतिक प्रणाली की असुविधाजनक स्थिति पर प्रहार किया है कहानी मे बताया गया है कि उतर भारत खासतौर पर दिल्ली के जब कतरों और

उठाईगीरों से बाहर से आए टुरिस्ट अनजान होने के कारण ठगे से रह जाते है और हमारे राजनीतिक नेता जो चुनाव के समय बड़े – बड़े वादे करते है और इन छोटे – छोटे दायित्वों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नही समझते और फिर दिल्ली के औद्योगिक क्षेत्रों मे चेन पुलिंग दो – दो घंटो तक ट्रेन का सीमा से ना निकल पाना और ट्रेन मे यात्रियों के साथ तोड़ – फोड़, असभ्य लोगों का किसी महिला यात्री से छेड़ – छाड़ करना, सटकर बैठना, उनके संरक्षक आपत्ति करे तो झगड़ा करना। ये सब कुछ भारत की शासन प्रणाली की अव्यवस्था को दर्शाता है जिसकी तरफ हमारे राजनीतिक बड़े – बड़े नेताओं का कोई ध्यान नही जाता और इसका एक बड़ा कारण यह है कि अधिकतर घरों की लड़कियाँ बाहर के वातावरण मे नौकरी – पेशा और अपना टैलेन्ट दिखाने से वंचित रह जाती है इसके लिए हमारी शासन प्रणाली का देश की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए नियम, कानूनों मे प्रतिक्रिया के द्वारा असभ्यता को सभ्यता मे बदलना होगा।

'कुरंजा' कहानी मे लेखिका ने दिखाया है कि राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों मे अनपढ़ लोगो की रूढ़ियों और पिछडापन आज भी गाँव की ढ़ाणियों मे जस का तस बना हुआ है रावलों का सत्ताधारी होना और स्थानीय पुलिस प्रशासन को खरीद लेना उनके बाएं हाथ का खेल है। स्त्री को प्रताड़ित करना, अपने स्वार्थ के लिए लांछित करना अपनी सत्ता के रूतबे को बढ़ाने जैसा ही होता है और वो इसका भरपुर उपयोग करते है प्रस्तुत कहानी मे रूढ़िगत समाज के द्वारा अेकली, असहाय, सताई गई स्त्री की अबोली व्यथा का बहुत ही सधे शिल्प मे चित्रण किया गया है।

लेखिका ने इस कहानी के द्वारा राजस्थान के सीमावर्ती इलाके के दूरस्थ गांवो और रावलों की अच्छी पोल खोली है बिल्कुल यही होता है इन रावलों के आसपास और मजाल है कि कोई इनकी महिलाओं को हाथ भी लगा दे, एक बेबस, गरीब स्त्री को 'डाकण' घोषित करके ये पुरा दुष्तन्त्र उसका दैहिक शोषण भी करता है और उसे मानसिक रूप से विकलांग भी बनाता रहा है। करजां कहानी मे राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र मे आधुनिक विचारों वाले नौकरी पेशा मास्टर साहब के माध्यम से उस क्षेत्र के पिछड़ेपन का चित्रण है जहाँ आज भी किसी मुसीबत को 'डाकण' के सिर मढ़ दिया जाता है अब 'डायन' 'स्त्री' का ही होना है, 'पुरूष' तो हो ही नही सकता। आजाद भारत का सामंती चेहरा और पिछड़े इलाकों मे फैली विभिन्न कुप्रथाएं आज भी भारत की लोकतान्त्रिक व्यवस्था के विकास को अवरूद्ध बना रही है।

'फांस' कहानी पारिवारिक या घरेलू हिंसा को केन्द्रीयता प्रदान करती है जो एक शराबी पिता द्वारा अपनी ही बेटी के बलात्कार की घटना पर आधारित है। जिसमे एक स्त्री अपने ही घर परिवार मे कैसे प्रताड़ित और शोषित होती है उम्र के सन्धि – स्थल पर लड़की कहलाने के सामाजिक संकेत और जीवन की उथल – पुथल अंतिमा के जीवन मे विपत्तियों और संघर्ष का कारण बनता है जिसमें वह पलायन नही बल्कि अपना वजूद बचा कर स्थितियों का सामना करती है स्थितियों उसके लिए जितनी विकट होती है उतना ही वह अन्दर से मजबूत होती है हमारी राजनीति प्रणाली को स्त्रियों के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा के बनाए गए कानूनों को लागू कर बड़े पैमाने पर स्त्रियों की राजनीतिक सहभागिता की प्राथमिकता को सुनिश्चित करना होगा। ''आत्मसन्देह और विश्वासों से घिरी – स्त्री को अपने अस्मिता की रक्षा के लिए नए विश्वास, नयी आस्था और नए विचारों की जरूरत है स्त्री को राजनीतिक प्रक्रियाओं मे रूचि लेनी सीखनी होगी ताकि स्त्री समुदाय को आगे बढ़ाया जा सके। अमानवीय विकास के प्रतिमानों को खारिज करना और जनोन्मुख नजरिये को विकसित करना नारीवाद का पहला उद्देश्य होना चाहिए।'' [4]

''पूरे बीस बरस लगे है, सदियों से चले आ रहे, पीढ़ी दर पीढ़ी लागू एक पेचीदा सत्ता तन्त्र की सही ताकत समझने मे और यह स्वीकार इतिहास, समाजशास्त्र या अर्थशास्त्र के आँकडे से नही आया। यह आया है हर वर्ग की औरतों की सैकड़ो अनौपचारिक, घरेलू, सायास, अनायास – हर किस्म की गोष्ठियों मे बतौर दर्शक, वक्ता, लेखिका, कामकाजी स्त्री, बेटी, बहू, माँ और पत्नी के रूप मे भाग लेने से। इस अनेक स्तरीय भागीदारी से यह धारणा कतई निरस्त हो गई है कि आजादी की लड़ाई मे भाग लेने वाले सभी स्त्री और पुरूष राजनीतिक और सामाजिक दोनो क्षेत्रों मे फैली विसंगतियों के विरूद्ध एक – सी नीयत और जोश – खरोश से लड़ रहे थे। सच्चाई यह है कि आजादी की लड़ाई मे वही औरतें शामिल हो पाई, जो मध्यवर्गीय शिक्षित शहरी घटनाओं से जुड़ी थी और अधिकतर पति, पिता, पुत्र या भाई के स्नेह या प्रोत्साहन की डोर से खींच कर इससे जुड़ी थी, निजी स्वतन्त्र निर्णय लेकर नही।'' [5]

ये द्वन्द्व की स्थिति है जो स्त्रियों के भीतर निरन्तर परिवार और समाज के दायित्वों को लेकर चलता रहता है ठीक इसी प्रकार का मानसिक द्वन्द्व 'स्यामीज' कहानी मे 'मानसी' व 'रूपसी' के किरदारों द्वारा लेखिका ने व्यक्त किया है असल मे इस प्रकार की स्त्रियाँ शायद किसी के बिना अपने आप को अधूरा महसूस करने लगी है तो किसी एक को लेकर कॉम्पलैक्स मे भी आ जाती है असल मे वो स्त्री ब्यूटी विद्मांइड है कभी उसे और कभी अपने रूप के बिना दोनो मे से किसी एक को चुनना हो तो वो असमंजस मे पड़ जाती है और उधर ये भी होता है कि कभी उसे लगता है की उसके बौद्धिक पक्ष के कारण उसके अन्दर की खालिस नारी खतरे मे आ गई है और कभी ये कि उसके अन्दर की सामान्य नारी उसके असल बौद्धिक पक्ष को दबा रही है। इस प्रकार 'स्यामीज' कहानी मे 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' की कथाकारी की वैविध्यता पर आश्चर्य होता है। अन्तिम कहानी 'गन्धर्व गाथा' प्रेम के चिरपरिचित परिवेश पर रची गई है।

''स्त्री अस्मिता का प्रस्थान बिन्दु स्त्रियों द्वारा अपनी छवि और अपना कार्य दोनो के निर्धारण संबंधी अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार है इतिहास गवाह है कि सत्ता और शासन ताकत देता है आदिमकाल से लेकर आज तक विकास पथ पर पुरूष का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और वरदानों से जीवन मे अक्षय शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्ति, चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है। युगों से स्त्री रियाया के रूप मे इस पुरूष – सत्ता के अधीन रहकर अपनी खुशियों, इच्छाओं, आकांक्षाओ को अपना वास्तविक सुख मानती आई लेकिन परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है इसलिए मनीषा जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारियों की विविध समस्याओं को सबके समक्ष लाने का प्रयास किया है।'' [6]

स्वतन्त्रता और समानता को प्राप्त करने के लिए अतीत से लेकर अब तक स्त्री ने लम्बी यात्रा तय की है स्त्री अस्मिता का प्रस्थान बिन्दु स्त्रियों द्वारा अपनी छवि और अपना कार्य दोनो के निर्धारण संबंधी अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार है। आज के समाज मे अनमेल विवाह की समस्या बहुत अधिक प्रमाण मे देखने को मिलती है और अत्यधिक प्रमाण मे नारियों के शोषण का यह सबसे बडा कारण माना जा सकता है। ''नारी जाति आधी मानव – जाति है। पुरूष जाति की जननी है पुरूष, पतिद्ध की संगिनी व अर्धांगिनी है ऋषि, मुनि, महापुरूष, चिंतक, वैज्ञानिक, शिक्षक, समाज – सुधारक सब की जननी नारी है सब इसी की गोद मे पले – बड़े है लेकिन धर्म, संस्कृति, सभ्यताओं, जातियों का इतिहास साक्षी है, कि ईश्वर की इस महान कृति को इसी की कोख से पैदा होने वाले पुरूषो ने ही बहुत अपमानित किया, बहुत तुच्छ, बहुत नीच बनाया। इसके नारीत्व का बहुत शोषण किया। इसकी मर्यादा, गरिमा व गौरव के साथ बहुत खिलवाड़ किया, इसके शील को बहुत रौंदा इसके नैतिक महात्म्य को मौन – अनाचार की गन्दगियों मे बहुत लथेड़ा है।'' [7] मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों की विशेषता यह है कि उनमे प्रखर राजनीतिक

चेतना है और सांप्रदायिकता के विरोध की रचनात्मक उर्जा भी। लेखिका देश प्रेम से ओत – प्रोत राजनीतिक भावना की परिचायक है।

मनीषा जी की राजनीतिक चेतना, सामाजिक चेतना के परिवेश के प्रति पूर्ण सजग रहते हुए स्वस्थ – सामाजिकता का सन्देश देती है। ''मानव समाज के अस्तित्व मे रहने के लिए आवश्यक होता है कि वह समस्त समाज के लिए निर्णय लेने वाले विशेषज्ञों का चुनाव करके सरकार का निर्माण करे। नियमों के अधीन सरकार का कार्य जनहित होना चाहिए। वही उत्तम राज्य की नीति व राजनीति है समाज का कोई भी पक्ष आज उससे अप्रभावित नही है'' [8] लेखिका भी अपने साहित्य मे राजनीति की इस परिभाषा की उपेक्षा नही कर सकी। समय, स्थान और समाज के अनुरूप राजनीति अपने बाह्य रूप को बदलती रही है, किन्तु उसके मूल तत्व और तथ्य वही के वही है राम और कृष्ण के युग से भारतवर्ष की राजनीति मे जो विंसगतियाँ और विद्रुपताएँ थी, वही प्रकारन्तर से स्वतन्त्र भारत की राजनीति मे भी विद्यमान है कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ एक उत्कृष्ट कलाकार है, जिन्होने भारतीय जनमानस पर स्पष्ट और दृढ़ रूप से अंकित अपनी कहानियों के माध्यम से स्वतन्त्र भारत की राजनीति को उसकी विसंगतियों और कुंठाओ के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। कोई भी साहित्यिक रचना उसके वर्ण्य – विषय के कारण जितनी लोकप्रिय होती है, उससे कही ज्यादा उसकी अभिव्यक्ति कला के कारण प्रसिद्ध होती है यह बात लेखिका भलि – भाँति जानती है यही कारण है कि उन्होने वर्तमान भारत की राजनीतिक परिस्थितियों को अपने कहानी संग्रह 'गर्न्धवं गाथा' की कहानियों के द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की है।

उपसंहार

मनीषा कुलश्रेष्ठ एक सफल प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है वे एक सफल कहानीकार होने के साथ – साथ एक सफल व्यंग्यकार भी है अपने कहानी संग्रह 'गन्धर्व गाथा' की कहानियों मे मनीषा जी ने वर्तमान भारत की राजनैतिक प्रणाली के प्रति व्यंग्य को परिभाषित किया है। संक्षेप मे हम कह सकते है कि मनीषा की राजनैतिक चेतना अत्यन्त पुष्ट है। सामाजिक चेतना के एक अनिवार्य घटक के रूप मे राजनैतिक चेतना का चित्रण उन्होने पूर्ण सजगता से किया है। मनीषा ने राजनीति मे भ्रष्टाचार के विभिन्न पहलुओं पर अपनी कहानियों के द्वारा प्रकाश डाला है। प्रजातन्त्र मे कैसे भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, इस पर भी उन्होने चिन्ता व्यक्त की है भ्रष्टाचार का सीधा सा अर्थ है अपने पद अथवा शक्ति के दबाव मे अनुचित काम करवाना। सत्ता एवं सामर्थ्य का दुरूपयोग ! कुरजां व स्वांग कहानी मे स्वाधीन भारत मे भ्रष्टाचार के बढ़ते विनाशकारी प्रभाव का मार्मिक चित्रण है। जनता यह सोचने के लिए विवश हो गई है कि राजनीतिज्ञ न किसी धर्म और मजहब का कल्याण चाहते है और न ही किसी व्यक्ति समूह का। वे मात्र अपने हित देखते है, अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए दुनिया का बड़े से बड़ा अहित कर सकते है इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनीषा की कहानियों मे राजनीति के प्रति आक्रोश व्याप्त है।

संदर्भ

1. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : पृष्ठ – 28, 2011.
2. सन्दर्भ के लिए देखे देह और प्रेम के कुहासे के बीच – राकेश बिहारी – सिताब दियारा
3. रोहिणी अग्रवाल साहित्य की जमीन और स्त्री – मन के उच्छ्वास, वाणि प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्करण : पृष्ठ – 19, 2014.
4. प्रभा खेतान उपनिवेश मे स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : पृष्ठ – 52, 2003.
5. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : पृष्ठ – 52, 2011.
6. प्रभा खेतान उपनिवेश मे स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : पृष्ठ – 35, 2003.
7. मृणाल पाण्ड़े स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1987, दूसरा संस्करण : 2002, तीसरा संस्करण : पृष्ठ – 52, 2011.
8. डॉ० आदर्श बाली (दत्त) गोविन्द बल्लभ पंत के कथा – साहित्य मे व्यक्ति और समाज अंकुर प्रकाशन, न्यू गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली, प्रथम संस्करण : पृष्ठ – 206, 2012.